

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजी०) चेन्नई

ज्योतिष प्रवीण परीक्षा : जून 2012

प्रश्न पत्र-III

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

कोई भी पाँच प्रश्न हल करें। प्रश्न 1 तथा 6 अनिवार्य हैं। दोनों भागों में से कम से कम एक-एक प्रश्न का चयन करते हुए तीन अन्य प्रश्नों के उत्तर दें। सब प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I (ज्योतिष योग)

1. (क) जन्मपत्री में विवाह व संतान जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं पर किस प्रकार ज्योतिषिय विचार करते हैं?
(ख) निम्न कुण्डली में 26 अगस्त 1910 को जन्में जातक की विवाह संभावनाओं या अन्यथा पर विचार करें।

राशि - लग्न-धनु, सूर्य-सिंह, चन्द्र-मेष, मंगल-सिंह, बुध-कन्या,
बृहस्पति-कन्या, शुक्र-कर्क, शनि (व)-मेष, राहु-वृषभ

नवांश - लग्न-मेष, सूर्य-मिथुन, चन्द्र-वृश्चिक, मंगल-तुला, बुध-कुम्भ
बृहस्पति-कर्क, शुक्र-वृश्चिक, शनि-सिंह, राहु-मकर

2. किन्हीं चार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :-
(क) श्रीकान्त योग (ख) पारिजात योग
(ख) लक्ष्मी नारायण योग (ग) दरिद्र योग
(ङ) सरस्वती योग

3. निम्न के क्या प्रभाव हैं?
(क) नीच ग्रह (ग) वक्री ग्रह
(ख) वर्गोत्तम ग्रह (घ) अस्त ग्रह

4. फलादेश में नक्षत्रों के क्या महत्व हैं? रेवती तथा अश्विनी का वर्णन करें।

5. (क) शुक्रकी तुला स्थिति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।
(ख) मिथुन लग्न में जन्में जातकों के सामान्य गुण धर्म क्या हैं?

भाग-II (दशा व गोचर)

6. किन्हीं दो के उत्तर दें :-
(क) योगिनी महादशा के सामान्य फल क्या हैं।
(ख) बृहस्पति महादशा (विशोत्तरी) के सामान्य फल क्या हैं?
(ग) विशोत्तरी के अंतर्गत फलादेश में अंतर्दशा स्वामी की क्या भूमिका है?
7. (क) वेध तथा विपरीत वेध क्या हैं? कुण्डली की सहायता से समझाएं।
(ख) मूर्ति निर्णय नियम पर टिप्पणी लिखें।
8. कक्षा क्या है तथा जन्म राशि में शनि गोचर प्रक्रिया में यह कैसे प्रयोग होती है?
9. चंद्रमा से विभिन्न भावों में शुक्र के गोचर परिणाम लिखें।
10. ग्रहों के गोचर परिणाम के लिए चंद्रमा की महत्ता क्यों है? द्वि गोचर सिद्धान्त से क्या अभिप्राय है?